International Journal for Research Publication and Seminar
ISSN: 2278-6848 | Vol. 15 | Issue 4 | Oct-Dec 2024 | Peer Reviewed & Refereed

जीवन का सत्य

अन्जू रानी
anjumitter@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.36676/jrps.v15.i4.211
Published: 22/12/2024
Check for updates
* Corresponding author

जीवन का सत्य – हम जन्म क्यों लेते हैं ? – प्रस्तावना

प्रायः हमसे यह प्रश्न पूछा जाता है, जीवन का सत्य क्या है ? अथवा जीवन का उद्देश्य क्या है ? अथवा हम जन्म क्यों लेते हैं ? जीवन के उद्देश्य के सन्दर्भ में अधिकतर हमारी अपनी योजना होती है, किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से सामान्यतः जन्म के दो कारण है। ये दो कारण हमारे जीवन के उद्देश्य को मूलरूप से परिभाषित करते हैं। ये दो कारण है :

- विभिन्न लोगों के साथ अपना लेन–देन पूरा करने के (चुकाने के) लिए।
- आध्यात्मिक प्रगति कर ईश्वर से एकरूप होने का अति ध्येय साध्य करने के लिए, जिससे कि जन्म–मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिले।

1. जीवन का सत्य – अपना लेन–देन चुकाना (पूर्ण करना)

अनेक जन्मों में हुए हमारे कर्म एवं क्रियाओं के परिणामस्वरूप हमारे खाते में भारी मात्रा में लेन–देन इकट्ठा होता है। ये लेन–देन हमारे कर्मों के स्वरूप के अनुसार अच्छे अथवा बुरे होते हैं। सर्वसाधारण नियमानुसार वर्तमान युग में हमारे 65 प्रतिशत जीवन प्रारब्धानुसार (जो कि हमारे नियंत्रण में नहीं है) और 35 प्रतिशत जीवन हमारे क्रियमाण कर्म अनुसार (इच्छानुसार नियंत्रित) होता है। हमारे जीवन की सर्व महत्वपूर्ण घटनाएं अधिकतर प्राब्धानुसार ही होती हैं, यही जीवन का सत्य है। इन घटनाओं में जन्म, परिवार (कुल), विवाह, संतान, गंभीर व्याधियां तथा मृत्यु का समय आदि अंतर्भूत है। जो सुख और दुःख हम अपने परिजनों को तथा परिचितों को देते हैं अथवा उनसे पाते हैं, वे हमारे पिछले लेन–देन के कारण होता है। ये लेन–देन निर्धारित करते हैं कि जीवन में हमारे सम्बन्धों का स्वरूप तथा उनका आरंभ और अंत कैसे होगा। वर्तमान जन्म में हमारा जो प्रारब्ध है, वह वास्तव में हमारे संचित का मात्र एक अंश है, जो अनेक जन्में से हमारे खाते में जमा हुआ हैं।

हमारे जीवन में यद्यपि पूर्व निर्धारित इस लेन–देन और प्रारब्ध को हम पूरा करते भी हैं, तथापि जीवन के अंत में अपने क्रियमाण (ऐच्छिक) कर्मों द्वारा उसे बढ़ाते भी हैं। जीवन के अंत में यह हमारे समस्त लेन–देन में संचित के रूप में जोड़ा जाता है। परिणामस्वरूप इस नए लेन–देन को चुकाने के लिए हमें पुनः जन्म लेना पड़ता है और हम जन्म–मृत्यु के चक्र में फंस जाते हैं।

2. जीवन का सत्य – आध्यात्मिक प्रगति

समष्टि आध्यात्मिक स्तर का अर्थ है, समाज के हित के लिए आध्यात्मिक साधना (समष्टि साधना) करने पर प्राप्त हुआ आध्यात्मिक स्तर जब कि व्यष्टि आध्यात्मिक साधना का अर्थ है, व्यक्तिगत आध्यात्मिक साधना (व्यष्टि साधना) करने पर प्राप्त आध्यात्मिक स्तर। वर्तमान समय में समाज के हित के लिए आध्यात्मिक साधना (प्रगति) करने का महत्व 70 प्रतिशत है, जब कि व्यक्तिगत आध्यात्मिक साधना का महत्व 30 प्रतिशत है।

किसी भी साधना पथ पर आध्यात्मिक विकास का चरम है परमेश्वर में विलीन होना। इसका अर्थ है, हममें तथा हमारे सर्व और विद्यमान ईश्वर को अनुभव करना, जो हमारी पंचज्ञानेंद्रियों, मन तथा बुद्धि के परे है। यह 100 प्रतिशत आध्यात्मिक स्तर पर संभव होता है। वर्तमान युग में अधिकतर लोगों का

आध्यात्मिक स्तर 20–25 प्रतिशत है और उन्हें आध्यात्मिक विकास हेतु साधना करने में कोई रूचि नहीं रहती। उनका अधिकाधिक तादात्म्य अपनी पंच ज्ञानेंद्रियों, मन और बुद्धि से रहता है। इसका प्रभाव हमारे जीवन में व्यक्त होता है, उदाहरणार्थ, जब हम अपने सौंदर्य पर अधिक ध्यान देते हैं अथवा हमें अपनी बुद्धि अथवा सफलता का अहंकार होता है।

साधना द्वारा हमारा जब समष्टि आध्यात्मिक स्तर 60 प्रतिशत अथवा व्यष्टि आध्यात्मिक स्तर 70 प्रतिशत हो जाता है, तब हम जन्म–मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाते हैं। इसके उपरांत हम अपने शेष लेन–देन का महर्लोक ओर आगे के उच्च सूक्ष्म लोकों में चुका सकते हैं (पूर्ण कर सकते हैं)। 60 प्रतिशत (समष्टि) अथवा 70 प्रतिशत (व्यष्टि) आध्यात्मिक स्तर के आगे पहुंचे कुछ जीवन मानवता का आध्यात्मिक मार्गदर्शन करने के लिए पृथ्वी पर जन्म लेने में रूचि रखते हैं।

अध्यात्म के छः मूलभूत सिद्धांतो के अनुसार साधना करने पर ही आध्यात्मिक विकास संभव है। जो आध्यात्मिक मार्ग इन छः मूलभूत सिद्धांतों का अवलंब नहीं करते, उनके अनुसार साधना करने वालों का विकास बाधित हो जाता है।

3. हमारे जीवन के लक्ष्यों के संदर्भ में जीवन का सत्य क्या है

हममें से अधिकतर लोगों के जीवन के कुछ लक्ष्य होते हैं, उदाहरणार्थ डॉक्टर बनना, धनवान बनना और प्रतिष्ठा कमाना अथवा किसी विशिष्ट क्षेत्र में अपने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करना। लक्ष्य जो भी हो, अधिकांश लोगों के लिए वह प्रायः एवं प्रमुखतः सांसरिक ही होता है। हमारी संपूर्ण शिक्षा प्रणाली इस प्रकार से विकसित की गई है कि हम इन सांसारिक लक्ष्यों का अनुसरण कर सकें। अभिभावक होने के नाते हम भी अपने बच्चों के सामने ये सांसारिक लक्ष्य रखकर उन्हें शिक्षित करते हैं, तथा ऐसे व्यवसायों के लिए प्रोत्साहित करते हैं जिनसे उन्हें हमसे अधिक आर्थिक लाभ मिलें।

किसी के मन में यह प्रश्न उभर सकता है कि इन सांसारिक लक्ष्यों का, जीवन के आध्यात्मिक ध्येय एवं पृथ्वी पर जन्म लेने के कारणों के साथ सामंजस्य कैसे हो सकता है?

उत्तर बहुत ही सरल है। हम सांसारिक लक्ष्यों के पीछे इसलिए भागते रहते हैं कि हमें संतोष एवं आनंद (सुख) प्राप्त हो। सामान्यतः अप्राप्य ऐसे सर्वोच्च और चिरंतन सुख की अभिलाषा ही हमारे प्रत्येक कृत्य की अंगभूत प्रेरणा होती है। किन्तु वास्तव में सांसारिक लक्ष्यों की पूर्ति होने पर भी प्राप्त सुख और संतोष अल्पकाल के लिए ही टिकता है। हम कोई अन्य सुख पाने का स्वप्न देखने लगते हैं।

परम और चिरस्थायी सुख की प्राप्ति केवल साधना द्वारा ही संभव है, जो छः मूल सिद्धान्तों पर आधारित है। सर्वोच्च श्रेणी के सुख को आनन्द कहते हैं, जो ईश्वर का गुणधर्म है। जब हम ईश्वर से एकरूप हो जाते हैं तब हमें भी उस चिरस्थायी आनंद की अनुभूति होती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपने दैनिक जीवन में जो कुछ कर रहे हैं, वह छोड़कर केवल साधना पर भी ध्यान केन्द्रित करें। अपितु इसका आशय यह है कि सांसारिक जीवन के साथ साधना के संयोजन से परम और चिरस्थायी सुख की प्राप्ति संभव है। यही जीवन का सत्य है। साधना के लाभ का विस्तृत विवेचन चिरस्थायी सुख के लिए आध्यात्मिक शोध के स्तम्भ में दिया है।

संक्षेप में हमारे जीवन के लक्ष्य, आध्यात्मिक प्रगति के आशय से जितने अनुरूप होंगे, उतना ही हमारा जीवन अधिक समृद्ध होगा और उतना ही हमें कष्ट अल्प होगा। यही जीवन का सत्य है। निम्नलिखित उदाहरण से यह स्पष्ट होगा कि आध्यात्मिक विकास एवं परिपक्वता के फलस्वरूप, जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण कैसे परिवर्तित होता है।

जीवन का सत्य – व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक अर्थ में अन्तर

	व्यावहारिक दृष्टिकोण	आध्यात्मिक दृष्टिकोण
अज्ञान क्या है ?	व्यवहारिक विषयों के ज्ञान का अभाव	ऐसा मानना कि ''मैं'' केवल देह और मन ही हूँ
'स्व' को समझने का अर्थ क्या है ?	ऐसा मानना कि ''मैं केवल देह और म नही हूँ''	''मैं'' का अर्थात् स्वयं में विद्यमान ईश्वरीय अंश का बोध और अनुभव होना
सफलता की व्याख्या क्या है ?	सम्मान, पैसा, प्रतिष्ठा, प्राप्त होना	आध्यात्मिक प्रगति

4. सांसारिक जीवन और आध्यात्मिक उद्देश्य के बीच सामंजस्य के उदाहरण

एस.एस.आर.एफ. में हमारे साथ ऐसे कई स्वयंसेवक हैं, जो यथाक्षमता अपना समय तथा कुशलता ईश्वर की सेवा में अपिर्त कर रहे हैं। उदाहरणार्थ,

- हमारे एक सदस्य सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) के परामर्शदाता है और वे अपने अवकाश में हमारे जालस्थल के तकनीकी कार्य संभालते हैं।
- संपादकीय विभाग की एक सदस्या मनोरोग – चिकित्सक है और वे अपलोड की जाने वाली जानकारी चिकित्सकीय तथा आध्यात्मिक दृष्टि से जांचने में सहायता करती है।
- एस.एस.आर.एफ. की एक अन्य सदस्या अपने व्यवसाय के लिए विविध देशों में यात्रा करती है। वे अपने अवकाश में उस देश के समविचारी संगठनों को एस.एस.आर.एफ. के जालस्थल की जानकारी देती है।
- एक गृहिणी आध्यात्मिक कार्यक्रमों में आने वालों के लिए खाद्यपदार्थ बनाने में सहायता करती है। अपनी दिनचर्या का अध्यात्मीकरण करने से एस.एस.आर.एफ. के सदस्यों के जीवन में भारी सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। आनंद में वृद्धि होना और दुःख की मात्रा अल्प होना, ये महत्वपूर्ण परिवर्तन है। जीवन के किसी दुःखभरे प्रसंग में अथवा दर्दनाक स्थिति में वे अनुभव करते हैं, मानो किसी ने उनके आस–पास सुरक्षा कवच बना दिया है।

5. जीवन का सत्य बार–बार जन्म लेने में अनुचित क्या है ?

कभी–कभी लोग सोचते हैं कि बार–बार जन्म लेने में अनुचित क्या है ? जैसे ही हम वर्तमान कलियुग में (संघर्ष के युग में) आगे बढेंगे, वैसे जीवन समस्याओं तथा दुःखों से घिर जाएगा। आध्यात्मिका शोध द्वारा यह पता चला है कि विश्वभर में औसतन 30 प्रतिशत समय मनुष्य खुश रहता है तथा 40 प्रतिशत समय वह दुखी ही रहता हैं शेष 30 प्रतिशत समय मनुष्य उदासीन रहता है। इस दशा में उसे सुख–दुख का अनुभव नहीं होता। उदाहरण जब कोई व्यक्ति रास्ते पर चल रहा होता है अथवा कोई व्यावहारित कार्य कर रहा होता है तब उसके मन में सुखदायक अथवा दुखदायक विचार नहीं होते, वह केवल कार्य करता है। इसका प्राथमिक कारण है कि अधिकतर व्यक्तियों का आध्यात्मिक स्तर अल्प होता है। इसलिए अनेकों बार हमारे निर्णय एवं आचरण से अन्यों को कष्ट होता है। साथ ही, वातावरण रज–तम फैलाता है। फलस्वरूप नकारात्मक कर्म और लेन–देन का हिसार बढ़ता है। इसलिए अधिकतर मनुष्यों के लिए वर्तमान जन्म की अपेक्षा आगे के जन्म दुखदायी होते हैं।

यद्यपि विश्व ने आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति की है, तथापि सुख (जो हमारे जीवन का मुख्य ध्येय है) के संदर्भ में, हम पिछली पीढ़ियों की अपेक्षा निर्धन है। यही जीवन का सत्य है।

हम सब सुख चाहते हैं; परन्तु प्रत्येक का अनुभव है कि जीवन में दुख आते ही है। ऐसे में अगले जन्म में ओर भविष्य के जीवन में सर्वोच्च तथा चिरंतन सुख प्राप्त होने की निश्चित नहीं है। जीवन का सत्य हे, केवल आध्यात्मिक उन्नति और ईश्वर से एकरूपता ही हमें निरंतर और स्थायी सुख दे सकते हैं।

सन्दर्भ

1. दादा भाई नौरौजी और रमेशचन्द्र दत्त की पुस्तकें ब्रिटिश राज का आर्थिक विश्लेषण है, हिन्दी स्वराज के दर्शन से संबद्ध कुछ भी उनमें नहीं है। शेष सभी अठारह पुस्तकें दार्शनिक रचनाएं हैं जो सभी पश्चिमी चिंतकों की है।
2. गुजरात राजनीतिक परिषद् में भाषण, गोधरा, 3 नवम्बर, 1917
3. उदाहरण के लिए देखें, 'गुजरात राजनीतिक परिषद् में भाषण , 3 नवम्बर 1917
4. चर्खे को 'भविष्य के भारत की सामाजिक व्यवस्था' का आधार बनाने की बात गाँधी 1940 में भी करते थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा की गई गुरु–गंभीर आलोचनाओं (देखें, इनका ''स्वराज साधना'' शीर्षक लेख) के बीस वर्ष बाद भी, बिना उसका कहीं उत्तर दिए।

भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी साहित्य

योगिता रानी
yogitakharb40@gmail.com

भूमिका

इक्कीसवीं सदी में समय समाज, संस्कृति, देश और भाषा में परिवर्तन आ रहा है। परन्तु इसमें घबराने की आवश्यकता नहीं है। परिवर्तन युग की मांग है। इस परिवर्तन का अन्य एक नाम है। भूमंडलीकरण अर्थात ग्लोबलाइजेशन। आज यह शब्द अपेक्षाकृत नया और काफी प्रचलन में आया शब्द है। इसे हिन्दी के साथ जोड़कर अक्सर सुना जाता है। हिन्दी भाषा और साहित्य पर इसका प्रभाव गहरा है। भूमंडलीकरण हिन्दी साहित्य जगत को रूपायित किया है। इस सन्दर्भ में ग्लोबल होती हिन्दी साहित्य पर चर्चा अनिवार्य है।

मूल शब्द

भूमण्डलीयकरण, हिन्दी साहित्य

ऑनलाईन हिन्दी साहित्य

आज हिन्दी साहित्य सूचना क्रांति, सैटेलाइट क्रांति, डिजिटल क्रांति के संपर्क से भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण का लाभ उठा रहा है। इसका स्पष्ट प्रमाण है इंटरनेट में हिन्दी साहित्य की लोकप्रियता। इंटरनेट पर आज हिन्दी के नाटक, कहानी, उपन्यास के साथ–साथ हिन्दी साहित्यकार एवं महापुरूषों की जीवानियों, भेंटवार्ताएं आदि भी उपलब्ध है। इसके साथ ही प्रकाशकों ने अपनी–अपनी वेबसाईट बना रखी है जिसके द्वारा ही अनेक रचनाकरों की महत्वपूर्ण पुस्तकें पाठकों को घर बैठे मिल जाती है। आज ई–संस्करण की सुविधा से हिन्दी के कई पुस्तकें पाठकों को अपने काम और रूचि के अनुसार चयन कर सकते हैं। हिन्दी के अनुक पत्रिकाओं का ई–संस्करण जारी किए हैं। तदनुसार आज 'हंस', 'वागार्थ', 'कथादेश,' 'तद्भव', 'नया ज्ञानोदय', 'मधुमति' और 'वाडमय' जैसे पत्रिकाएं इंटरनेट पर उपलब्ध है। साथ ही प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक के श्रेष्ठ हिन्दी साहित्य के एक लाख पृष्ठ इंटरनेट पर डाले जा रहे हैं, ताकि देश–विदेश के हिन्दी प्रेमी घर बैठे पुस्तकों को पढ़ सकें। भक्तिकालीन कवि तुलसी कृत 'रामचरितमानस' अब डिजिटल रूप में इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। इस प्रकार कबीर, रहीम, सूर, प्रेमचन्द, भारतेंदु हरिशचन्द्र, रामचन्द्र शुक्ल और समकालीन हिन्दी साहित्यकारों के रचनाएं भी इंटरनेट में उपलब्ध है। महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से हिन्दी का संपूर्ण श्रेष्ठ साहित्य को कम्प्यूटर पर उपलब्ध कराया है। यह हिन्दी समय वेब पर देखा जा

सकेगा। आजकल स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के लिए ब्लॉग एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है। बहुत सी हिन्दी साहित्यकार इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। इस प्रकार 'फेसबुक', व्हाट्सएप्प' जैसे सोशल मीडिया में भी हिन्दी साहित्यकार सक्रिय है। आज विभिन्न भाषाओं की कृतियाँ हिन्दी में और हिन्दी कृतियाँ विदेशी भाषाओं में अनुदित होकर उपलब्ध हो रही है। साथ ही ये रचनायें इंटरनेट में भी उपलब्ध है। जे.के. रॉलिंग कृत हैरी पॉटर, चेतन भगत की रचनाऐं, प्रेमचन्द, हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचनाऐं भी अनुवाद के सशक्त उदाहरण है। अतः भाषिक वैश्वीकरण में अनुवाद का स्थान महत्वपूर्ण है।

ऑफलाइन हिन्दी साहित्य

ऑफलाइन हिन्दी साहित्य का मतलब सामान्य हिन्दी साहित्य से है। टेक्नोलॉजी और विज्ञान ने हिन्दी के इस साहित्य रूप को भी विस्तार करके उसे एक नूतन स्वरूप प्रदान कर दिया है। आज हिन्दी साहित्य पर भूमंडलीकरण का सशक्त प्रभाव दृष्टव्य है। अब हिन्दी के साथ अंग्रेजी और सामान्य बोलचाल की भाषा का मिश्रण आम बात हो गयी है। अतः हिन्दी साहित्य भी नई वाली हिन्दी का स्वरूप ग्रहण किया है। इस नई वाली हिन्दी ने अंग्रेजी पाठकों को भी हिन्दी की ओर आकर्षित किया है और साथ ही हिन्दी में बोलने, लिखने और पढ़ने में गर्व का अनुभव महसूस कराते हैं। हिन्दी साहित्य के विभिन्न विधाओं में भूमंडलीकरण का असर प्रकट है। हिन्दी कविता में वैश्वीकरण और बाजारवाद के प्रभाव को रेखांकित किया गया है। बाजार के विविध रूप और दृश्यों जैसे – शेयर बाजार, संवेदी सूचकांक, मुद्रास्फीति, तेल की कीमतें, महाजनी पूंजी, विज्ञापन, विश्वबैक, टेलीविजन, कम्प्यूटर, उपभोक्तावाद, उद्योग, प्यावरणस, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, मीडिया, मुनाफा, भ्रष्टाचार, दुकान, रिश्वत, व्यवहार, नये अर्थशास्त्रीय सिद्धांत, किसानों की आत्महत्याएं आदि सम्बन्धी सूचनाएं एवं संकेत आते हैं। बाजार आज की कविता का मुख्य बीज शब्द के रूप में बदल गया है। बाजार जिस तरह से दिखता है, उसी प्रकार का नहीं होता। यहां चमत्कारों के उत्पादन का सबसे बड़ा व्यापार होता है। इस व्यापार से कवि मंगलेश डबराल मनुष्य की आत्मीचता, प्रेम, सुख तथा शांति को बचाना चाहता है। उसकी 'बाजार' शीर्षक कविता मीडिया की प्रभुता में जमे बाजार के नकलीपन का पर्दाफाश करती है। कवि कहते हैं कि – जिस तरह दिखता है –

वह उस तरह नहीं होता
यह बाजार का एक
इस आध्यात्मिक आधार है
इसलिए चमत्कारों का
उत्पादन सबसे बड़ा व्यापार है
मसलन शांति नाम का यह
आरामदेह सोफा लीजिए
जिसके बीच में रखने के लिए
यह पारदर्शी मेज है
बैठने के कुछ ही बाद
प्रकट होता है एक शांत विचार और
सुख की नींद के लिए तो यह
बिस्तर मशदूर ही है
जिसकी विज्ञापन करते हुए
कई सुंदरियाँ बूढ़ी हो चली है।

हिन्दी कवियों ने भूमण्डलीकरण पर भयावह दृष्टिकोण से बार–बार चिंता प्रकट की है। हिन्दी कहानी साहित्य से भी भूमण्डलीयकरण का प्रभाव प्रकट है। राजेश जैन की कहानी 'क्यू में खड़ी उदासी' बहुराष्ट्र कंपनियों में काम करने वाले युवा लोगों के धीरे–धीरे रोबोट बनाते चले जाने का और मानवीय

संवदनाओं से कटते जाने का सबसे अच्छा उदाहरण है। इस प्रकार एकान्त श्रीवास्तव ने अपनी कहानी 'लड़की और आम' में बाजारवादी वैश्विक जीवन का वर्णन किया है। गीत चतुर्वेदी की कहानी 'सिमसिम' में आज हिन्दी भाषा पर होने वाला भूमण्डलीकरण का सशक्त प्रभाव दृष्टव्य है। उदाहरण के रूप में इस कहानी के कुछ अंश प्रस्तुत करना चाहता हूँ – ''सामने कम्प्यूटर पर जीमेल खुला हतुआ है। उसके ऊपर गूगल टॉक की विंडो खुली हुई है और रह रह कर चमक रही है। उस तरफ से किसी 'मेरा नाम जोकर' का सन्देश आया है। – wru? वह आखिरी सन्देश है। उसके ऊपर में जो शायद लड़की है, की तरफ से भेजा गया सन्देश है – m not cnfm.jst waitn.waitn, waitn :-(मेरी हिम्मत नहीं होती कि मैं कम्प्यूटर की तरफ देखूँ। कविता, कहानी की भांति उपन्यास साहित्य में भी आज भूमण्डलीयकरण सशक्त रूप से विद्यमान है। प्रदीप, सौरभ, अलका सरावगी जैसे रचनाकारों ने अपने उपन्यासों में भूमण्डलीकरण सशक्त रूप से विद्यमान है। प्रदीप, सौरभ, अलका सरावगी जैसे रचनाकारों ने अपने उपन्यासों में भूमण्डलीकरण का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। प्रदीप, सौरभ का 'मुन्नी मोबाइल' और अलकासरावगी का 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यासों में भूमण्डलीय व्यापार जगत, मोबाइल, क्रान्ति, इंडिया की इकानॉमी कल्चर, मल्टीनेशनल कंपनियों के दिग्गज प्रबंधन अधिकारियों, विकास की द्रुत गति, समकालीन कला बाजार (आर्ट मार्किट), नयी पीढ़ी और उसकी यूनिक स्वतन्त्रता आदि पर केन्द्रित है। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के अन्य विधाओं में भी भूमंडलीकरण का सशक्त प्रभाव दृष्टिगत होते हैं।

अब हिन्दी और हिन्दी साहित्य वर्चुअल वल्ड में अपना अस्तित्व में स्थिरता लायी है। हिन्दी साहित्य को वैश्विक बनाने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि आज के लेखक वर्तमान समय की सच्चाईयों और प्रवृतियों को पहचानकर और परिणातियों को समझकर रचना करें।

सन्दर्भ

1. संग्रथन, अंक : 9 वर्ष : 28, मार्च : 2015, पृष्ठ : 50 से उद्दत
2. गीत चतुर्वेदी, सिमसिम, प्रगतिशील वसुधा, कहानी विशेषांक – 1 पृष्ठ – 314, 2008–2009